RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-02
February -2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com [UGC Listed Journal]

बीपीएल वर्ग के प्रतिभाशाली और सामान्य किशोर विद्यार्थियों की सामाजिक एवं शैक्षिक समस्याओं का एक अध्ययन

[1]राकेश कुमार, [2]डॉ. आभा सिंह

[1]पीएच.डी (शोधार्थी) शिक्षा विभाग, जैन विश्व भारती संस्थान, (मान्य विश्वविद्यालय) लाडनूँ ,राजस्थान।
[2]सहायक आचार्या, शिक्षा विभाग, जैन विश्व भारती संस्थान, (मान्य विश्वविद्यालय) लाडनूँ ,राजस्थान।

उद्देश्यः

शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य ''बीपीएल वर्ग के प्रतिभाशाली और सामान्य किशोर विद्यार्थियों की सामाजिक एवं शैक्षिक समस्याओं का एक अध्ययन'' करना है। वर्तमान समय में बीपीएल वर्ग के प्रतिभाशाली और सामान्य किशोर विद्यार्थियों को अनेक सामाजिक एवं शैक्षिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इन समस्याओं के अध्ययन हेतु शोधार्थी द्वारा एक संक्षिप्त प्रयास किया गया हैं।

प्रस्तावनाः-

वर्तमान सामाजिक जटिलताओं का प्रभाव प्रतिभाशाली एवं सामान्य किशोर विद्यार्थियों पड़ रहा है। यही बालक जब किशोरावस्था में प्रवेश करते है, तो परिस्थितिवश उन्हें अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। परिणामस्वरूप प्रतिभाशाली एवं सामान्य किशोर को अपनी सृजनात्मक शक्तियों के विकास में कई सामाजिक समस्याओं का सामना करता है। जब प्रतिभाशाली एवं सामान्य किशोर विद्यालयी जीवन में प्रवेश करते हैं तो उन्हें समाज, विद्यालय जीवन के विविध क्षेत्रों में असमायोजन का सामना करना पड़ता है। ऐसी स्थिति में उनका आचरण समाज सम्मत न होकर समाज के प्रतिकूल हो जाता है।

एक राष्ट्र की उन्नति उसके प्रतिभाशाली एवं सामान्य किशोर विद्यार्थियों पर निर्भर है, जैसा कि सर्वविदित है कि आज का बालक देश का भावी नागरिक हैं। जिसे समाज ही पूर्ण रूप से तैयार करता है। इसलिए आवश्यक है कि हमारे भावी नागरिक योग्य, कुशल एवं आदर्श व्यक्तित्व लिए हो। किशोर विद्यार्थियों के ये सभी व्यावहारिक पक्ष तभी विकसित हो सकते है, जबकि वह जीवन की विभिन्न सामाजिक परिस्थितियों में स्वयं को समायोजित करने लायक बना सके।

वर्तमान समय में प्रतिभाशाली एवं सामान्य किशोर विद्यार्थी समाज के अन्य वर्गों से विकास में पिछड़ते जा रहे हैं। इसके परिणाम स्वरुप सामाजिक जटिलता इतनी अधिक होती जा रही है कि चारों ओर असंतोष छाया हुआ है। प्रतिभाशाली एवं सामान्य किशोर विद्यार्थियों को समाज और आर्थिक पिछड़ेपन का सामना करना पड़ता है। परिणाम स्वरुप ये लोग राष्ट्रीय धारा से पूरी तरह से मिल नहीं पाये है। और समाज में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने में असमर्थ रहे हैं। इनके कमजोर सामाजिक स्तर की संविधान निर्माताओं को पूरी जानकारी थी। और इन्हें सामाजिक न्याय दिलाने के लिये संविधान में विशेष प्रावधान किये गये है।

प्रतिभाशाली और सामान्य किशोर विद्यार्थियों की सामाजिक समस्याएँ :-

वर्तमान परिस्थिति के कारण आज का बीपीएल वर्ग का विद्यार्थी बड़ा ही असमंजस में है। उसकी सामाजिक समस्याएँ क्या है? इससे शिक्षा तथा समाज पर क्या प्रभाव पड़ रहा है? एवं देश में व्याप्त साम्प्रदायिकता एवं पूँजीवाद किस सीमा तक उसके विभिन्न दृष्टिकोणों को प्रभावित कर रहे है, तथा इन नवीन परिस्थितियों में ये अपने आप को किस प्रकार समायोजित कर वे अपनी शिक्षा किस प्रकार से कर पाते है?

वास्तव में बीपीएल वर्ग के विद्यार्थियों की अपनी सरलता और अज्ञानता ही उनके लिये अभिशाप सिद्ध हुई है। इस वर्ग ने अपना नैतिक बल, साहस, विरोध और प्रत्याक्रमण की क्षमता समाप्त कर दी है। अपने ही क्षेत्र में उन्हें समाज के अन्य वर्गों के लोग ओछी नजरों से देखते है और मनुष्य में नीचे स्तर का समझते है। इन्ही सब बातों को ध्यान में रखते हुये यह आवश्यक हो जाता है कि प्रतिभाशाली एवं सामान्य विद्यार्थियों की शैक्षिक एवं सामाजिक समस्याओं का अध्ययन किया जाए।

सामान्यतः लोगों में यह अवधारणा पायी जाती है कि प्रतिभाशाली एवं सामान्य बीपीएल विद्यार्थियों का मानसिक स्तर अत्यन्त उच्च होता है। और वे समाज के विकास में अपना उचित एवं बड़ा योगदान दे पायेगें। इसका प्रमुख कारण सामाजिक समस्याओं के कारण पिछड़कर प्रतिभाशाली एवं सामान्य बालक विकास के मामले में पीछे रह जाते है।

उनके सामने दूसरा महत्त्वपूर्ण पहलू यह कि प्रतिभाशाली एवं सामान्य विद्यार्थियों के परिवारों में मूलभूत आवश्यकताओं की कमी पूरी नहीं हो पाती है। जिस कारण उनमें सृजनात्मक एवं स्व-प्रेरणा (आत्म-सम्प्रत्यय) का उचित विकास नहीं हो पाता क्योंकि इन साधनों के अभाव में बालक अपनी उचित सृजन क्षमता का पूर्ण रुप से उपयोग नहीं कर पाते है। प्रतिभाशाली एवं सामान्य विद्यार्थी जब अपने को समाज के अन्य व्यक्तियों या वर्गों से पिछड़ा पाते है तो वे अपने परम्परागत व्यवसाय कृषि,वन कार्य व खनन कार्यों को न चाहते हुये भी करने लगते है। इसके पीछे एक प्रमुख कारण है,उसका सामाजिक रुप से कमजोर होना।

प्रतिभाशाली एवं सामान्य विद्यार्थियों में सृजनात्मक एंव आत्म-सम्प्रत्यय को अगर सही ढ़ग से प्रशिक्षित व्यक्तियों द्वारा निखारा जाए तो वे अपने गुणों को अत्यन्त तीव्र रुप से विकसित कर अपने जीवन को क्रांतिमय बना सकते है। क्योंकि प्रतिभाशाली एवं सामान्य विद्यार्थियों में प्रतिभा, परिश्रम,

RRIJM 2015, All Rights Reserved

कर्मनिष्ठ व सहयोग की भावना से यह परिपूर्ण होते है। अब आवश्यकता है तो एक ऐसे मार्गदर्शन की जिसमें प्रतिभाशाली एवं सामान्य बीपीएल वर्ग के किशोरों की आवश्यकताओं को समझते हुये उनके साथ यथा संभव उचित व्यवहार किया जाए।

इसलिये शिक्षा प्राप्त करने हेतु सामान्य विद्यालयों में जो विद्यार्थी आते है, उन्हीं के अनुरूप प्रतिभाशाली एवं सामान्य बीपीएल विद्यार्थियों द्वारा अपनी सृजनशीलता व आत्म-सम्प्रत्यय का उचित विकास कर सके तथा जिसके कारण समाज, विद्यालय व राष्ट्र के जीवन में अभूतपूर्व वाँछनीय परिवर्तन आ सके।

प्रतिभाशाली और सामान्य किशोर विद्यार्थियों की प्रमुख सामाजिक समस्याओं का वर्णनः-

हमारे देश मे एक बड़ी संख्या में ऐसे बालक है। जिन्हें उनकी जातिवर्ग या लिंग के कारण अनेक प्रकार के अभावों में जीवन व्यतीत करना पड़ता है। ऐसे बालकों को जो बीपीएल वर्ग एवं गरीब परिवारों में उत्पन्न होते है। या ऐसी जाति में जिसे समाज में अनेक सुविधाओं से वंचित रहना पड़ता है। इन बालकों में हीनता की भावना उत्पन्न हो जाती है। जो उनके व्यक्तिव के विकास पर बुरा प्रभाव डालती है। ऐसे बालकों की समस्याओं को सामाजिक समस्याएँ कहते हैं। जिसके कारण इनका समाज में पूर्ण विकास नहीं हो पाता है।

इस कारण यह आवश्यक हो जाता है कि शिक्षा की ओर विशेष ध्यान दिया जाए। सरकार अनुसूचित जातियों, पिछड़ी जातियों, बीपीएल वर्ग और बालिकाओं की शिक्षा के लिए विशेष अनुदान देती है। और अन्य कई प्रकार की सुविधाएँ प्रदान करती है। इनका बालकों के व्यक्तित्व के विकास पर प्रभाव तो पड़ता है, और उनमें से अनेक शिक्षित भी हो जाते है। किन्तु प्रारम्भिक जीवन में जो अभाव उन्होंने सहे वह उनके व्यवहार पर बहुत कुछ प्रभाव डालते रहते हैं। अत एवं हमें उनकी समस्याओं की और ध्यान देना चाहिए। और उन उपायों को अपनाना चाहिए जो उनकी समस्या को दूर कर सकें। राजस्थान में प्रतिभाशाली और सामान्य किशोर बीपीएल विद्यार्थियों से सम्बन्धित सामाजिक समस्याएँ निम्नलिखित हैं :-

1. अल्प आयु से ही रोजी-रोटी कमाने की चिंता।
2. घर के वातावरण का दूषित होना जहाँ उन्हें सभ्य व्यवहार का प्रशिक्षण नहीं मिलता।
3. शिक्षा ग्रहण करने के लिए प्रेरणा का अभाव।
4. हीनता की भावना मन में बन जाना।
5. सृजनशीलता को पोषित होने का अवसर नहीं मिलना।
6. गंदे अस्वस्थ स्थान में परिवार के साथ रहना।
7. विद्यालय में पक्षपात पूर्ण वातावरण का सामना करना।
8. परिवार और आस-पड़ौस में लड़ाई-झगड़े और अश्लीलता के बीच रहना।
9. निम्न स्तर के विद्यालयों में ही प्रवेश पाना जहाँ सुविधाओं का अभाव होता है।
10. बीपीएल विद्यार्थियों के अभिभावकों का अशिक्षित होना।
11. प्रतिभाशाली और सामान्य किशोर विद्यार्थियों के परिवार की समाज में आर्थिक स्थिति निम्न होना।
12. विद्यार्थियों के परिवार में अन्धविश्वास, व धार्मिक कुप्रथाओं की समस्याँ।
13. परिवार में अभिभावकों द्वारा लड़का-लड़की में भेद करना।
14. परिवार की समाज में स्थिति एवं जाति की रूढ़ीवादिता की समस्याँ।
15. प्रतिभाशाली और सामान्य किशोर बीपीएल विद्यार्थियों की विद्यालय में स्थिति एवं सहपाठियों के व्यवहार की समस्याँ।

उपर्युक्त समस्याओं के कारण शिक्षा से वंचित बालक बाल अपराधी बन जाते है, या व्यावहारिक दोषों से ग्रस्त हो जाते है। बीपीएल बालिकाएँ अपने को बालकों से हीन समझने लगती है। और उनमें दूसरों पर आश्रित रहने की प्रवृति बन जाती है। वह स्वतंत्र निर्णय नहीं ले पाती है।

प्रतिभाशाली और सामान्य किशोर विद्यार्थियों की सामाजिक समस्याओं का उपचारः-

राजस्थान में प्रतिभाशाली और सामान्य किशोर बीपीएल विद्यार्थियों से सम्बन्धित सामाजिक समस्याओं का उपचार निम्नलिखित हैं :-

1. प्रतिभाशाली और सामान्य किशोर विद्यार्थियों के अभिभावकों को शिक्षित करना।
2. प्रतिभाशाली और सामान्य किशोर विद्यार्थियों के परिवार की समाज में आर्थिक स्थिति को मजबुत करना।
3. प्रतिभाशाली और सामान्य किशोर विद्यार्थियों के परिवार की समाज में अन्धविश्वास, व धार्मिक मान्यताओं को तोड़ना।
4. प्रतिभाशाली और सामान्य किशोर विद्यार्थियों के परिवार पर आस-पड़ौस के वातावरण को प्रभावशाली बनाना।
5. प्रतिभाशाली और सामान्य किशोर विद्यार्थियों के परिवार में अभिभावकों द्वारा लड़का-लड़की के भेदभाव को मिटाना।
6. प्रतिभाशाली और सामान्य किशोर विद्यार्थियों के परिवार की समाज में स्थिति एवं जाति की रूढ़ीवादिता को तोड़ना।
7. प्रतिभाशाली और सामान्य किशोर विद्यार्थियों के परिवार में समाजिक कुप्रथाओं को समाप्त करना।
8. प्रतिभाशाली और सामान्य किशोर विद्यार्थियों की विद्यालय में स्थिति एवं सहपाठियों का व्यवहार अच्छा बनाना।

प्रतिभाशाली और सामान्य किशोर विद्यार्थियों की प्रमुख शैक्षिक समस्याएँ :-

मानव जीवन में शिक्षा का बहुत महत्त्व है लेकिन आजकल शिक्षा के क्षेत्र में विद्यार्थियों को अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है, जिससे उसकी शैक्षिक उपलब्धि प्रभावित हो रही है। शैक्षिक समस्याओं से तात्पर्य इस शोध में उन बाधाओं व रुकावटों से लगाया गया है जो छात्रों में अधिगम के दौरान उत्पन्न होती है।

इस प्रकार शैक्षिक समस्याओं से हमारा अभिप्राय उन समस्याओं से हैं जो बालक को शिक्षा प्राप्त करने में आती है। एक बीपीएल विद्यार्थी के सामने अनेक समस्याएँ शिक्षा के क्षेत्र में आती है जो निम्नलिखित है :-

1. उपयुक्त अध्ययन विषयों का चयन करने की समस्याँ।
2. नवीन प्रकार के शैक्षिक पाठ्यक्रमों तथा पाठ्य सामग्री क्रियाओं का चुनाव करने की समस्याँ।
3. बेरोजगारी की समस्याँ।
4. अधिगम प्रक्रिया में अपेक्षित उपलब्धि स्तर, रुचि एवं तल्लीनता बनाये रखने की समस्याँ।

5. शैक्षिक संस्थान के अभिनव कार्यों में समन्वय कायम करने की समस्याँ।
6. अपव्यय एवं अवरोधन की समस्या का हल प्राप्त करने समस्याँ।

इसके अलावा निम्नलिखित समस्याऐं भी शैक्षिक समस्याओं की श्रेणी में आती है :-

1. शहरी क्षेत्र की तुलना में ग्रामीण क्षेत्रों में शैक्षिक संसाधनों की कमी।
2. बालकों को पढ़ाने में माता पिता की अरुचि।
3. बीपीएल बालकों का घरेलु कार्यों में व्यस्त होना।
4. जटिल पाठ्यक्रम।
5. अभिभावकों का रोजगार के उद्देश्य से पलायन।
6. विद्यालय भवनों का अभाव तथा जर्जर हॉल एवं भवन।
7. शिक्षकों के रिक्त पद।
8. शिक्षकों के जिम्मे गैर शैक्षणिक कार्य से पढ़ाई प्रभावित।
9. अभिभावकों में जागृति का अभाव।
10. अभिभावकों का अशिक्षित होना।

भारत एक निर्धन राष्ट्र है जहाँ अधिकांश अभिभावकों के पास अपने तथा अपने बच्चों के लिए दो वक्त की रोटी खाने के लिए पर्याप्त धन नहीं है। ऐसी स्थिति में उनके द्वारा अपने बच्चों को अध्ययन के लिए सम्पूर्ण साधन सुविधाएँ उपलब्ध कराना सम्भव नहीं है। इसके अलावा जनसंख्या वृद्धि के कारण एक-एक कक्षा में कम से कम 60-60 विद्यार्थी अध्ययन करते हैं। ऐसे में शिक्षक द्वारा सभी छात्रों पर व्यक्तिगत रूप से ध्यान देना अत्यन्त कठिन कार्य है। इसमें कई छात्रों की समस्याएँ, समस्याँ ही बनी रहती है और वे कुसमयोजित होकर अनुशासनहीनता सम्बन्धी कार्य करते है। इसका प्रमुख कारण शैक्षिक समस्या का विद्यार्थी पर पूर्ण रूप से हावी होना है। अतः शैक्षिक समस्याएँ विद्यार्थी की शिक्षा प्राप्ति में बाधक तत्व है। संविधान में इन्हें जो सुविधाएं दी गई है उनका बहुत बड़ा उद्देश्य यह है वे इस काबिल हो जाये कि देश में आर्थिक, राजनैतिक और सामाजिक जीवन में पूरी तरह से अपनी भागीदारी कर सकें।

सारांशः-

अतः इस परिप्रेक्ष्य में देखा जाये तो शिक्षा ही एक ऐसा माध्यम है, जो समाज के प्रतिभाशाली एवं सामान्य वर्ग के किशोरों की अपनी सृजनात्मकता का उचित विकास तथा स्वयं को जानने में सहायक की भूमिका निभा कर इन्हें समाज के प्रगति पथ पर चलने योग्य बना सकती है। जिससे ये लोग समाज के विकास में अपना बराबर योगदान देकर समाज को उन्नति की नये शिखर पर पहुँचा सके।

कोठारी कमीशन ने भी लिखा है कि ''शिक्षा समाज तथा राष्ट्रीय एकता को मजबूत बनाती है, प्रजातंत्र को संगठित करती है तथा देश को एक नई राह ग्रहण करने में सहायता प्रदान करती है।'' शिक्षा बालक का सर्वांगीण उन्नति का अति उत्तम साधन है। उसके व्यक्तित्व का पूर्ण विकास रुपी सोपान है। शिक्षा बालक के अन्तर्निहित शक्तियों को उभारकर उन्हें पूर्ण विकसित करती है। बीपीएल वर्ग के प्रतिभाशाली और सामान्य किशोर विद्यार्थियों की सामाजिक एवं शैक्षिक समस्याओं के अध्ययन द्वारा हम बीपीएल वर्ग के प्रतिभाशाली और सामान्य किशोर विद्यार्थियों की समस्याओं का सरल तरीकें से समाधान कर सकते हैं।

संन्दर्भ ग्रन्थ सूची :-

1. उपाध्याय, पशुपतिनाथ (2011 विद्या-मेघ),''शिक्षण के मूल सिद्धान्त और शिक्षक का दायित्व''।
2. गर्ग,सरिता (2005),''भारतीय आधुनिक शिक्षा'', एन.सी.ई.आर.टी. (नई दिल्ली)
3. भटनागर, सुरेश,''आधुनिक भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याएँ ''आर.लाल बुक डिपो, मेरठ।
4. शर्मा, मधुबाला, सुरजमल, (2014) ''भारतीय समाज और शिक्षा'' शिक्षा प्रकाशन, जयपुर।
5. सक्सेना एन.आर,(2010)''शिक्षा के दार्शनिक एवं समाज-शास्त्रीय आधार''आर.लाल बुक डिपो, मेरठ।

पत्र-पत्रिकाएं लेखः-

1. सहगल,एन (2005), ''समावेशी-शिक्षा के लिए क्षेत्र मानचित्रण भारतीय साहित्य की समीक्षा''।
2. शर्मा,अनिल कुमार, (2011) विद्यामेघ), लेखः-''पूर्ण साक्षरता की दिशा में एक कदम सर्व शिक्षा अभियान'' (पेज न. 23)

Websites

1. http://www.raj.shiksha.edu.in
2. http://www.educationrajnet.com
3. https://bpl.wikipedia.org